of demand curve) भी कहते हैं। माँग की वृद्धि एवं कमी में उपभोक्ता की माँग अनुसूची (Demand Schedule) बदल जाती है, जिसके परिणामस्वरूप उपभोक्ता का माँग वक्र भी दाई या बाई ओर खिसक जाता है।

.2. **गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण (Cardinal Utility Analysis)**

गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण माँग का सबसे प्राचीन सिद्धान्त है जिस नव प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियो (Neo Classical Economists) ने दिया था। चूंकि इस सिद्धान्त का अन्तिम रूप मार्शल द्वारा प्रदान किया गया इसलिए इसे मार्शल का उपयोगिता विश्लेषण (Marshallian utility analysis) के नाम से भी जाना जाता है।

मार्शल के गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण की मान्यताएं (Assumptions of Marshallian Cardinal Utility Analysis)

1. उपभोक्ता तर्कपूर्ण (Rational) ढंग से व्यवहार करता है तथा वह अपनी उपयोगिता को अधिकतम करना चाहता है।
2. वस्तु के उपभोग से प्राप्त उपयोगिता का परिमाणात्मक माप संभव है और इसको गणनावाचक संख्याओं (cardinal numbers) में व्यक्त किया जा सकता है।
3. मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता (Marginal Utility of Money) स्थिर रहता है।
4. उपयोगिताएं स्वतंत्र होती हैं (Utility are Independent) अर्थात उपभोक्ता को एक वस्तु के उपभोग से जो उपयोगिता प्राप्त होती है वह पूर्णतया उस वस्तु की मात्रा पर निर्भर होती है।
5. गणनावाचक विश्लेषण उपयोगिता को **योगात्मक** मानती है जिसका अर्थ है कि विभिन्न वस्तुओं से प्राप्त उपयोगिता को जोड़ कर क्रय की गई समस्त वस्तुओं के उपभोग से प्राप्त कुल उपयोगिता को प्राप्त किया जा सकता है।

i. **कुल उपयोगिता एवं सीमान्त उपयोगिता (Total Utility and Marginal Utility)**

वस्तु की सभी इकाइयों के उपभोग से जो उपयोगिता उपभोक्ता को प्राप्त होती है, उसे **कुल उपयोगिता** कहते हैं।

कुल उपयोगिता सीमान्त उपयोगिता का योग होती है। इस प्रकार :

$$TU_m = MU_1 + MU_2 + MU_3 + ... + MU_m$$

जहां TU_m वस्तु की कुल m इकाइयों से प्राप्त कुल उपयोगिता है तथा MU_1, MU_2,

LASSES 1-C-8, Sheela Chowdhary Road, Talwandi, Kota (Raj.) Ph:- 0744-2429714 , www.vpmclasses.com

(क) **कीमत माँग** : कीमत माँग से अभिप्राय वस्तु की उन खरीदी जाती हैं, बशर्ते अन्य निर्धारक रहते हैं। अन्य निर्धारकों में उपभोक्ता आय, उनके स्वाद तथा फैशन एवं अन्य सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें सम्मिलित हैं।

(ख) **आय माँग** : आय माँग से अभिप्राय वस्तु की उन विभिन्न मात्राओं से है जो आय में विभिन्न स्तरों पर उपभोक्ताओं द्वारा खरीदी जाती हैं, बशर्ते अन्य कारक यथास्थिर (Constant) रहते हों।

(ग) **प्रत्युत्तर माँग** : प्रत्युत्तर माँग से अभिप्राय किसी वस्तु की उन विभिन्न मात्राओं से होता है जिन्हें उपभोक्ता किसी अन्य सम्बन्धित वस्तु की विभिन्न कीमतों पर खरीदता है, बशर्ते अन्य सम्बन्धित वस्तु की विभिन्न कीमतों पर खरीदता है, बशर्ते अन्य कारक यथास्थिर रहते हों। इस प्रकार प्रत्युत्तर मांग किसी वस्तु की मांग तथा दूसरी किसी अन्य सम्बन्धित वस्तु की कीमत के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है।

माँग के नियम के अपवाद (Exceptions to the Law of Demand)

1. गिफिन वस्तुएं (Giffen Goods)
2. कीमत वृद्धि की आशंका (Fear of rise in Prices)
3. आपात कालीन स्थिति (Emergencey)
4. फैशन में परिवर्तन (Change in Fashion)
5. मिथ्या आकर्षक (Conspicuous Consumption)

माँग में विस्तार या संकुचन (Expansion and Contraction of Demand)

जब वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर वस्तु की मांगी गई मात्रा में कमी होती है तो इसको 'माँग में संकुचन' (Contraction of Demand) कहते है।

वस्तु की कीमत में कमी होने पर यदि वस्तु की माँगी गई मात्रा में वृद्धि होती है तो इसे 'माँग में विस्तार' (Expansion of Demand) कहते हैं। माँग के विस्तार एवं संकुचन को 'एक ही माँग वक्र पर अन्तरण' (Movement along the same demand curve) भी कहा जाता है।

माँग में वृद्धि तथा कमी (Increase and Decreae in Demand)

यदि वस्तु की कीमत में कोई परिवर्तन न हो, और उपभोक्ता की आय, फैशन, रूचि (tastes), जनसंख्या आदि में परिवर्तन के कारण माँग मे परिवर्तन (Change in demand) होते हैं, तो इसे माँग में वृद्धि या कमी कहा जाता है। इसको हम 'माँग वक्र का स्थानान्तरण' (Shift

माँग विश्लेषण — मांग का नियम

माँग फलन

किसी वस्तु की मांग पर बहुत से कारकों का प्रभाव पड़ता है। जैसे वस्तु की कीमत, व्यक्ति की आय, तथा सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें। वस्तु की मांग तथा इसकी मांग को प्रभावित करने वाले कारकों के बीच परस्पर सम्बन्ध स्थापित करने वाले फलन को मांग फलन (Demand Function) कहते हैं। इसको निम्न प्रकार से लिखा जा सकता है :

$$D_x = f(P_x, I, P_y, P_z)$$

जहाँ D_x = वास्तु X की मांग

P_x = वस्तु X की कीमत

I = व्यक्ति की आय

P_y, P_z = सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें

माँग का नियम (Law of Demand)

माँग का नियम वस्तु की कीमत तथा बाजार में माँग की गई उसकी मात्रा के बीच सम्बन्ध को व्यक्त करता है। इस नियम को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है :

"यदि माँग को प्रभावित करने वाले अन्य कारक स्थिर रहें तो किसी वस्तु की माँग एवं उसकी कीमत के बीच विपरीत अथवा विलोम सम्बन्ध होता है। ऊंची कीमत पर वस्तु की कम मात्रा खरीदी जाती है और कम कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा को खरीदा जाता है, बशर्ते माँग के अन्य निर्धारक स्थिर रहें।"

माँग के प्रकार (Types of Demand)

माँग तीन प्रकार की होती है–

(क) कीमत माँग (Price Demand)

(ख) आय माँग (Income Demand)

(ग) प्रत्युत्तर माँग (Cross Demand)

ATTACHED